देव उठनी एकादशी — चयनित पूर्ण अध्याय का पुनर्कथन

Dev Uthani Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Padma Purana 6.61, exact controlling revision 336457. Also compared: Wikisource revision API — complete matching archived content; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — source/adaptation licence; Wisdomlib / N. A. Deshpande — full chapter 61 English comparison only; modern prose not copied.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.61.1–68, Sanskrit Wikisource revision 336457, not a transcription of the original text.

ब्रह्मा–नारद का प्रबोधिनी-माहात्म्य

KATHA 6.61.1–25

रमा का माहात्म्य सुनकर युधिष्ठिर कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी पूछते हैं। कृष्ण बताते हैं कि ब्रह्मा ने नारद से इस विषय पर जो कहा था, वह सुनायेंगे। नारद उस प्रबोधिनी का महत्त्व पूछते हैं जिसमें धर्म-कर्म प्रवर्तक गोविंद जागते हैं। ब्रह्मा उसे पाप-हरण, पुण्य-वृद्धि और मुक्ति से जोड़ते हैं। तीर्थ, समुद्र, सरोवर और गंगा-भागीरथी की महिमा उसके आने तक बड़ी कही जाती है। एक उपवास को अनेक अश्वमेध और राजसूय के फल से तुलनीय बताते हैं; दुर्लभ या बिना माँगे फल, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, बुद्धि, राज्य और सुख की प्रशंसा आती है।

मेरु-मन्दर समान पाप और हजारों जन्मों के कर्म को मिटाने की उपमा दी जाती है। विधि के अनुसार किये छोटे कर्म को विशाल फल और विधि बिना किये बड़े कर्म को छोटा फल कहकर आचरण का महत्त्व बताते हैं। मन से ध्यान करने वालों के पितरों का विष्णुलोक, बड़े अपराधों से मुक्ति, रात्रि-जागरण का तीर्थ-स्नान तथा सोना-भूमि दान के समान फल और कुल-पवित्रता का वर्णन है। मृत्यु निश्चित लेकिन धन और शरीर अस्थिर कहे गये हैं।

आगे घर में तीर्थों की उपस्थिति, पुत्र-पौत्र, ज्ञान, योग, संयम, भोग और पुनर्जन्म से मुक्ति का माहात्म्य आता है। यह पूरा धार्मिक प्रवचन है, विवाह या बच्चों की प्राप्ति की कहानी नहीं। इन कथनों से संतान, धन, बुद्धि, परलोक या जन्म-मुक्ति की गारंटी न निकालें; किसी की हानि मिटाने का दावा उत्तरदायित्व और सुधार का विकल्प नहीं।

After hearing Rama's greatness, Yudhishthira asks about Kartika's bright Ekadashi. Krishna relays Brahma's teaching to Narada. Narada asks about Prabodhini, when Govinda, the sustainer of religious action, awakens. Brahma associates it with removal of sin, increasing merit and liberation. Pilgrimage sites, oceans, lakes and Ganga-Bhagirathi are praised as prominent until its arrival. One fast is compared with many Ashvamedha and Rajasuya sacrifices; difficult or unsolicited fruits, splendour, possessions, understanding, sovereignty and happiness are celebrated.

Meru and Mandara illustrate the scale of sin removed, with thousands of births also mentioned. Small acts performed in the stated manner receive vast fruit, while great acts without it receive little. The teaching describes ancestors in Vishnu's world, release from serious wrongdoing, vigil merit compared with pilgrimage and gifts of gold and land, and purification of a family. Death is certain while wealth and the body are unstable.

It then praises pilgrimage present at home, children and grandchildren, wisdom, yoga, restraint, enjoyment and freedom from rebirth. This is a complete religious discourse, not a marriage or childbirth story. It does not guarantee children, wealth, intelligence, an afterlife or liberation; claims of removal of harm do not replace accountability and repair.

कार्तिक में कर्म, कथा, संगीत और सामर्थ्य

KATHA 6.61.26–49

ब्रह्मा कर्म, मन और वाणी से हुए पाप के नाश तथा स्नान, दान, जप और जनार्दन-पूजा के अक्षय फल कहते हैं। बाल्य, युवावस्था और वृद्धावस्था के कर्म, धन-अन्न और विष्णुधाम का उल्लेख आता है। जागरण के फल को ग्रहण के फल से हजार गुना और स्नान, होम, स्वाध्याय तथा पूजा को करोड़ गुना बताने वाली प्रशंसा है। कार्तिक-व्रत न करने पर पहले का पुण्य निष्फल होने की कठोर चेतावनी भी है। हम इसे स्रोत की भाषा के रूप में बताते हैं, न करने वालों के लिए दण्ड, दोष या भय का निर्णय नहीं।

दूसरे का अन्न छोड़ने की चर्चा चान्द्रायण के फल से जुड़ती है। फिर शास्त्र-कथा को यज्ञ और दान से भी प्रिय बताते हैं। आधे या चौथाई श्लोक के सुनने, कथा कहने, नियमित श्रवण और प्रबोधिनी पर हरि-कथा को गायों तथा सात द्वीपों वाली पृथ्वी के दान-समान फल कहा गया है। वक्ता का अपनी क्षमता के अनुसार सम्मान और कार्तिक में गान, नृत्य, वाद्य तथा विष्णु-कथा की प्रशंसा आती है।

यहाँ कथा और शिक्षात्मक पाठ को महत्त्व दिया गया है; कोई काल्पनिक चरित्र-कथा नहीं जोड़ी गयी है। भोजन का स्रोत सीमित करना, चान्द्रायण करना, रात भर जागना, दूसरे धर्म-कर्म त्यागना, पशु या भूमि देना आवश्यक नहीं। भोजन, पानी, नींद और उपचार की जरूरतें प्राथमिक हैं। सामर्थ्य से सम्मान का उल्लेख कोई अनिवार्य भुगतान या जन्म-आधारित अधिकार नहीं बनाता।

Brahma speaks of removal of wrongdoing through action, mind and speech and lasting merit from bathing, giving, recitation and Janardana worship. He mentions deeds across childhood, youth and old age, wealth and grain, and Vishnu's abode. Praise multiplies vigil merit over eclipse merit a thousandfold and bathing, offerings, study and worship a crore-fold. The discourse also sternly declares earlier merit fruitless without a Kartika observance. This is reported as the source's language, not a judgment of penalty, guilt or fear for non-observers.

Avoiding another's food is associated with Chandrayana merit. The teaching then places sacred narration above sacrifices and gifts: hearing half or a quarter of a verse, telling accounts, listening regularly and hearing Hari's account on Prabodhini are compared with gifts of cows or the earth's seven islands. It honours a narrator according to one's means and praises song, dance, instruments and Vishnu's account in Kartika.

Narrative and teaching are valued without adding a fictional character story. Restricting food sources, undertaking Chandrayana, keeping an all-night vigil, abandoning other religious acts or giving animals or land is not required here. Food, water, sleep and treatment take priority. Honour according to means does not create mandatory payment or rights based on birth.

अर्पण, तुलसी का पूरा वर्णन और अध्यायान्त

KATHA 6.61.50–68

अन्तिम भाग कार्तिक के बोध-दिवस में फूल, फल, कपूर, अगुरु और कुंकुम से पूजा तथा शंख में जल लेकर अर्घ्य का वर्णन करता है। अर्घ्य का फल तीर्थ और दान के फल से करोड़ गुना कहा गया है। गुरु को भोजन, वस्त्र और दक्षिणा से सम्मान देना तथा भागवत और पुराण-श्रवण के प्रत्येक अक्षर को कपिला गाय के दान-समान मानना आता है। अपनी शक्ति से वैष्णव-व्रत के फल में मुक्ति कही गयी है। यहाँ केवल धार्मिक विधान का वर्णन है; शंख, सामग्री, धन या आग का प्रयोग इस पाठ की शर्त नहीं।

इसके बाद केतकी-पत्र, अगस्ति-कुसुम और मुनिपुष्प से केशव की पूजा के फल आते हैं। तुलना की अंग्रेजी में मुनिपुष्प को आम के फूल या पत्तों से जोड़ा गया है; संस्कृत के चुने शब्द को किसी निश्चित वनस्पति की खरीद-सलाह नहीं बनाया गया। तुलसी-पत्तों और फूलों को जन्मों के पाप हरने वाला बताया गया है। तुलसी को देखना, छूना, ध्यान करना, नाम लेना, रोपना, सींचना और पूजना गिनाकर स्रोत इसे नवधा भक्ति कहता है। सूची से नौ स्वतंत्र क्रियाएँ स्पष्ट नहीं बनतीं, इसलिए हमने कोई नौवीं क्रिया नहीं गढ़ी।

रोपी हुई तुलसी की शाखाएँ, बीज, फूल और पत्ते बढ़ने तक परिवार के बीते, वर्तमान और भविष्य के जनों का हरिधाम में रहना, एक तुलसी-दल का अनेक फूल-पत्तों के समान फल, कोमल दलों से महाविष्णु की पूजा तथा अनेक यज्ञ-दान के तुल्य पुण्य समापन में आते हैं। अध्याय 61 का अलग अन्त-वाक्य कार्तिक शुक्ल एकादशी और उमापति–नारद संवाद को पहचानता है। यह तुलसी-विवाह की कथा या उसकी तिथि नहीं है। फल धार्मिक दावे हैं, वनस्पति की दवा, पवित्र जल पीने, अनिवार्य अर्पण या परिवार के उद्धार की गारंटी नहीं।

The final part describes awakening-day worship in Kartika with flowers, fruit, camphor, aguru and kumkuma, and water offered from a conch. Its merit is praised as a crore-fold of pilgrimage and giving. It describes honouring a teacher with meals, clothing and gifts and compares each letter heard from Bhagavata or Purana recitation with a tawny-cow gift. Liberation is associated with observance according to capacity. These are described religious provisions; a conch, supplies, money or fire are not conditions of this reader.

The source then praises worship with ketaki leaves, agasti blossoms and munipushpa. The English comparison connects munipushpa with mango blossoms or leaves; the selected Sanskrit term is not turned into botanical shopping advice. Tulsi leaves and flowers are praised as removing sins across births. Seeing, touching, meditating upon, naming, planting, watering and worshipping Tulsi are listed, and the source calls this ninefold devotion. The wording does not clearly enumerate nine separate acts, so no ninth act is invented.

The closing praises a family's past, present and future members dwelling with Hari while planted Tulsi grows branches, seeds, flowers and leaves; a single Tulsi leaf is compared with many flowers and leaves; tender leaves in Mahavishnu worship are compared with numerous sacrifices and gifts. A separate chapter-61 colophon identifies Kartika's bright Ekadashi and the Umapati–Narada dialogue. This is not the Tulsi Vivah story or its date. The fruits remain religious claims, not plant medicine, advice to drink sacred water, compulsory offerings or a guarantee of family deliverance.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Dev Uthani Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.61.1–68, revision 336457, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to the retelling and its language layers, not unrelated site content or code. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.